

शिव स्तुती मराठी | Shiv stuti Marathi

कैलासराणा शिवचंद्रमौळी।
फणींद्र माथां मुकुटी झळाळी।
कारुण्यसिंधू भवदुःखहारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 1 ॥

रवींदु दावानल पूर्ण भाळी।
स्यतेज नेत्रीं तिमिरौघ जाळी।
ब्रह्मांडधीशा मदनांतकारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 2 ॥

जटा विभूति उटि चंदनाची।
कपालमाला प्रित गौतमीची।
पंचानना विश्वनिवांतकारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 3 ॥

वैराग्ययोगी शिव शूलपाणी।
सदा समाधी निजबोधवाणी।
उमानिवासा त्रिपुरांतकारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 4 ॥

उदार मेरु पति शैलजेचा।
श्रीविश्वनाथ म्हणती सुरांचा।
दयानिधीचा गजचर्मधारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 5 ॥

ब्रह्मादि वंदी अमरादिनाथ।
भुजंगमाला धरि सोमकांत।
गंगा शिरीं दोष महा विदारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 6 ॥

कर्पूरगौरी गिरिजा विराजे।
हळाहळें कंठ निळाचि साजे।

दारिद्र्यदुःखे स्मरणं निवारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 7 ॥

स्मशानक्रीडा करितां सुखावे।
तो देव चूडामणि कोण आहे।
उदासमूर्ती जटाभस्मधारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 8 ॥

भूतादिनाथ अरि अंतकाचा।
तो स्वामी माझा ध्वज शांभवाचा।
राजा महेश बहुबाहुधारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 9 ॥

नंदी हराचा हर नंदिकेश।
श्रीविश्वनाथ म्हणती सुरेश।
सदाशिव व्यापक तापहारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 10 ॥

भयानक भीम विक्राळ नग्न।
लीलाविनोदें करि काम भग्न।
तो रुद्र विश्वंभर दक्ष मारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 11 ॥

इच्छा हराची जग हे विशाल।
पाळी रची तो करि ब्रह्मगोल।
उमापति भैरव विघ्नहारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 12 ॥

भागीरथीतीर सदा पवित्र।
जेथें असे तारक ब्रह्ममंत्र।
विश्वेश विश्वंभर त्रिनेत्रधारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 13 ॥

प्रयाग वेणी सकळा हराच्या।
पादारविंदी वाहाती हरीच्या।

मंदाकिनी मंगल मोक्षकारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 14 ॥

कीर्ती हराची स्तुति बोलवेना।
कैवल्यदाता मनुजा कळेना।
एकाग्रनाथ विष अंगिकारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 15 ॥

सर्वातरी व्यापक जो नियंता।
तो प्राणलिंगाजवळी महंता।
अंकी उमा ते गिरिरूपधारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 16 ॥

सदा तपस्वी असे कामधेनू।
सदा सतेज शशिकोटिभानू।
गौरीपती जो सदा भस्मधारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 17 ॥

कर्पूरगौर स्मरल्या विसांवा।
चिंता हरी जो भजकां सदैवा।
अंती स्वहीत सुवना विचारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 18 ॥

विरामकाळीं विकळ शरीर।
उदास चिंतीं न धरीच धीर।
चिंतामणी चिंतनें चित्तहारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 19 ॥

सुखावसाने सकळ सुखाची।
दुःखावसाने टळती जगाचीं।
देहावसाने धरणी थरारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥ 20 ॥

अनुहात शब्द गगनी न माय।
त्याने निनादें भव शून्य होय।

कथा निजांगे करुणा कुमारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥21॥

शांति स्वलीला वदनीं विलासे।
ब्रह्मांडगोळी असुनी न दिसे।
भिल्ली भवानी शिव ब्रह्मचारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥22॥

पीतांबरे मंडित नाभि ज्याची।
शोभा जडीत वरि किंकिणीची।
श्रीदेवदत्त दुरितांतकारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥23॥

जिवाशिवांची जडली समाधी।
विटला प्रपंची तुटली उपाधी।
शुद्धस्वरें गर्जति वेद चारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥24॥

निधानकुंभ भरला अभंग।
पाहा निजांगें शिव ज्योतिर्लिंग।
गंभीर धीर सुर चक्रधारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥25॥

मंदार बिल्वें बकुलें सुवासी।
माला पवित्र वहा शंकरासी।
काशीपुरी भैरव विश्व तारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥26॥

जाई जुई चंपक पुष्पजाती।
शोभे गळां मालतिमाळ हातीं।
प्रताप सूर्यशरचापधारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥27॥

अलक्ष्यमुद्रा श्रवणीं प्रकाशे।
संपूर्ण शोभा वदनीं विकसे।

नेई सुपंथे भवपैलतीरीं।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥28॥

नागेशनामा सकळा जिव्हाळा।
मना जपें रे शिवमंत्रमाळा।
पंचाक्षरी घ्यान गुहाविहारीं।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥29॥

एकांति ये रे गुरुराज स्वामीं।
चैतन्यरूपीं शिवसौख्य नामीं।
शिणलों दयाळा बहुसाल भारी।
तुजवीण शंभो मज कोण तारी ॥30॥

शास्त्राभ्यास नको श्रुति पढुं नको तीर्थासि जाऊं नको।
योगाभ्यास नको व्रतें मख नको तीव्रें तपें तीं नको।
काळाचे भय मानसीं धरुं नको दुष्टांस शंकुं नको।
ज्याचीया स्मरणें पतीत तरती तो शंभु सोडू नको ॥31॥